परिशिष्ट

१. संदर्भ ग्रंथ सूची ।

२. माचवे जी का पत्र ।

आधार ग्रंथ

१	डॉ.माचवे प्रभाकर	ड्रामा किताब घर, दिल्ली
२	डॉ.माचवे प्रभाकर	एकतारा हिन्दी प्रचारक संस्थान वाराणसी, प्रथम सं.१९५८
३	डॉ.माचवे प्रभाकर	दर्द के पैबन्द साहित्य भवन प्रा.लिमिटेड, इलाहाबाद, प्र.सं.१९७४
४	डॉ.माचवे प्रभाकर	लक्ष्मीबेन राजपाल एंड सन्स, दिल्ली, प्रथम सं., १९७७
५	डॉ.माचवे प्रभाकर	कहाँ से कहाँ पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, द्वितीय सं., १९८९

संदर्भ ग्रंथ सूची

१	डा.गुप्ता शांतिस्वरूप	- उपन्यास: स्वरूप,संरचना तथा शिल्प अलंकार प्रकाशन दिल्ली,प्रथम सं.१९८०
२	गोयनका कमलकिशोर	- प्रभाकर माचवे : प्रतिनिधि रचनाएँ साहित्यनिधि,दिल्ली,प्रथम सं.,१९८४
३	त्रिगुणायत गोविन्द	- शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त एस.चन्द एण्ड कंपनी,दिल्ली,प्रथम सं.१९६८।
४	धवन सुषमा	- हिन्दी उपन्यास राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.,दिल्ली,प्रथम सं.१९६१
५	पाठक मारुतिनन्दन	- डॉ.प्रभाकर माचवे : सौ दृष्टिकोण पारमिता प्रकाशन,गया, प्रथम सं.,१९८८
६	बुधकर कमलकान्त और जायसवाल शिव	- अक्षर - अर्पण आयास -प्रकाशन,दिल्ली,प्रथम सं.१९८१
७	माचवे प्रभाकर	- साँचा हिन्दी प्रचारक,वाराणसी
८	माचवे प्रभाकर	- किशोर कृष्णा प्रकाशन,अजमेर,द्वितीय सं.,१९७७
९	माचवे प्रभाकर	- दशभुजा विभूति प्रकाशन,दिल्ली, प्रथम सं.,१९८१
१०	रस्तोगी शैल	- हिन्दी उपन्यास में नारी
११	रांगा रणवीर	- हिन्दी उपन्यास में चरित्र-चित्रण का विकास भारती साहित्य मंदिर, सन १९६१ ई.

१२ डॉ.रेणा कृष्णा - प्रभाकर माचवे के हिन्दी उपन्यास
विभूति प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम सं.१९८५

१३ डॉ.शुक्ल रामलखन - हिन्दी उपन्यास कला
सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम सं.१९७२

१४ डॉ.सिंह त्रिभुवन - हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद

१५ डॉ.सुजाता - हिन्दी उपन्यासों में असामान्य चरित्र
मंगल प्रकाशन, जयपुर ,१९८४

शोध प्रबन्ध

डॉ.नागर रणवीर - डॉ.प्रभाकर माचवे के साहित्य का अनुशीलन और
हिन्दी - साहित्य की विविध विधाओं को
उनका योगदान,
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, १९८४-८५ ।

पत्रिका

प्रा.सुराणा रतनलाल-माचवे जीवन यात्रा : एक पडाव कलकत्ता, १९८५ ।

चौथासंसार सुबह का हिन्दी अखबार

1-1-90

प्रभाकर माचवे
सम्पादक

प्रिय डॉ.

नव वर्ष की बधाई। आपको, आपके परिवारजनों को भी।

17 दिसंबर का पत्र मिला। डा. प्रदीप नागर की थीसिस भी प्राप्त हो गई है। वह इतनी बड़ी है कि पोस्टल से जाना संभव नहीं। कभी इधर आओगे तो देख लेना। मैं इंदौर में इस विचार-प्रभाकर पुरस्कारों तक यानी मार्च 90 तक तो निश्चित हूँ ही।

अनुसंधान कार्य के प्रयोजन से उत्तर दे रहा हूँ कि यह छोटा उपन्यास 'एक नारी' मैंने सन 50 में, यानी आज से चालीस वर्ष पूर्व लिखा था इलाहाबाद में। मेरी पत्नी गर्भवती थी और मेरी आय बहुत कम थी। अस्पताल का खर्च ज्यादह था। छोटा बच्चा 3 साल का था। और बालकृष्णराव मित्र (डा. लोहिया के समाजवादी अनुयायी) इलाहाबाद से 'कल्पना' साहित्यिक मासिक निकालते थे। उन्होंने 'चेतना प्रकाशन' आरंभ किया था। उसके लिए मैंने जल्दी में [illegible] एक सप्ताह में यह लघु-उपन्यास लिखा और भेज दिया। उन्होंने 300 रुपये भेजे थे। उसके बाद मैंने उसका 'एका' बनाया। असल में मूल उपन्यास के [illegible] 'नारी' (बौद्ध देवी) की प्रतिमा का चित्रण था, वही मेरी स्फूर्ति का केन्द्र था। मैंने महाराष्ट्र के एक समाजवादी कार्यकर्ता को देखा था कि उसने एक लड़की को प्रेम का आश्वासन देकर फिर उसे बाद में छोड़ दिया। वही कथा आधार था। वह लड़की बाद में एक [illegible] से विवाह कर चुकी थी। दोनों के नाम मैं भूल रहा हूँ। राजनीतिक और सार्वजनिक जीवन के इस अंतर्द्वंद्व को लेकर यह मैंने [illegible] लिखी [illegible] इस [illegible] साथ, [illegible] प्रयोजन उत्तर में आया [illegible] प्रयोग की [illegible] अपने आप हो गये हैं।

① नारी को मैं 'शक्ति' मानता हूँ। वह 'स्व-तंत्र' होना चाहती है, वह हो नहीं पाती। यही विषय बाद में मेरे उपन्यासों में आता है — 'द्वाभा' और 'अनदेखे' तक। इस 'शक्ति' के साथ पुरुष ने कैसा खिलवाड़ किया है, यह इस में अन्य चित्रों से Contrast

पंजीकृत कार्या. एवं प्रेस ▷ 117-ए, सेक्टर-ई, सावेर रोड इण्डस्ट्रीयल एरिया, इन्दौर ग्राम ▷ संसार फोन ▷ 21931, 23137
शहर कार्या. ▷ 13-14, जवाहर मार्ग, प्राधिकरण भवन (चौथी मंजिल), इन्दौर-452 007 फोन ▷ 67803, 65670

में केन्द्रस्थ अंकित किया गया है।

इनके जैसे बिजली। इनसे अब बड़े-बड़े बाँध और कारखाने चला सकते हैं। और चाहे तो इनसे हमें चलवायें; या (जान बचायें), या इलेक्ट्रोनिक गाये बजायें; उसका उपयोग करनेवाला आदमी या विद्युत होगी है या आदमी है — न कि 'इनके'। वह अपने आप में पवित्र है, अनाकृत है।

(2) नायिका नाग इसी निरपेक्षता इनके का प्रतीक है।

(3) पिता, माता, भाई, साहित्य, प्रियजन, आंदोलन के सहयात्री, सबके प्रति उसके मन में आस्थाएँ हैं और वे टूटती हैं। उनसे अंतर्द्वंद्व पैदा होता है कि मैं जो कुछ सोचूँ सही है, या नहीं है? क्या यह नैतिक है या अनैतिक है?

(4) प्रश्न 4, प्रश्न 2 की ही पुनरावृत्ति है।

(5) जयन्त समाजवादी आंदोलन का एक प्रमुख नेता था वह उसे आदर्श पुरुष मानती थी, जो उसे प्रश्रय देता। पर वह था 'God that failed' या 'God with clay feet' — अविश्वसनीय 'मात्र पुरुष' सिद्ध हुआ।

(6) समाजवाद चाहता है कि स्त्री पुरुष समान अधिकार और स्वतंत्रता वाले हों। पुरुष यदि अवैध रख सकते हैं, तो नारी क्यों नहीं रख सकती? इसी प्रयोग में वह टूटती जाती है। उसे 'अवैध रिश्तों की प्रक्रिया' के आचरण में अपना प्रतिशोध या प्रतिकार करती है। चूँकि सन '42 का समाज और आज 48 वर्ष बाद भी भारतीय समाज 'पुरुष'-प्रधान ही है। वह अवहेलना वाली समाज नहीं सह सकता है।

(7) पुरुष प्रभुत्व के होते हैं। सोसाइटी अथवा अभिजात वर्ग में अधिक 'फ्री' माना है (आर्थिक और अन्य प्रकारों से)

(8) जब स्त्री जो भी पुरुष प्राप्त होता बाद के बड़े समाजों शामिल होनेवाली है, तो ऐसे छोटे घरों से बड़े घरों में, एक कुटीर नाव थी, उसे लोग समुद्र में सिमट पड़ती है, ऐसा लगता है।

(9) पुरुष उसी स्त्री से विवाह (प्रेम या) करना चाहता है, जो उसके समाज-वर्ग (आर्थिक दृष्टि से उच्च मध्यवर्ग या निम्न-मध्यवर्ग) का हो। इस तरह से प्रेम का अर्थ 'अर्थ' रह जाता है। मार्क्स ने कहा था "पूँजीवादी समाज में कोई Values नहीं रहते, केवल price रहते हैं। सब वस्तुएँ वस्तुओं की तरह बिकती हैं: इज्जत, प्रामाणिकता, सतीत्व"।

(10) इस प्रश्न का उत्तर इस प्रश्न (1) के उत्तर में दे चुका हूँ। अनु-मानसिक स्थिति 'अहं की पूर्ति' के लिए मिल नहीं पाता वह समाज को दोषी ठहराता है, वह स्त्री या जाति के 'अंतर्बाह्य' को जोड़ता-तोड़ता है।

(11) स्त्रियों में आरत-तंत्र, असहायता का आक्रोश और ... प्रति ममता है।

... KHARDEKAR LIBRARY ... KOLHAPUR

चौथासंसार सुबह का हिन्दी अखबार

प्रभाकर माचवे
सम्पादक

-3-

(12) वे उस परिप्रेक्ष्य में जरूरी। अलग अलग अकेला उनका कोई अर्थ नहीं।

(13) यही बात निराला की कविता के साथ है। नारी अपने आपको अनुल्लंघित, उपेक्षित, अज्ञात और विवश पाती है।

आपने जो चार वाक्य दिए हैं — उनके अलग अलग कोई अलग अर्थ नहीं होते। उनका अर्थ उस-उस संदर्भ में होता है। कभी कभी नारी यह अनुभव करती है कि वह जिसको निरपेक्ष प्रेम करना चाहती है, उसका प्रतिदान नहीं मिल रहा है। कभी कभार कर्म-पथ (गोपि-आदि की तरह) उसके प्रेम में आड़े आती है। उसके पिता नहीं चाहते कि नारी 'समाजवादी' अथवा युवकों के साथ राजनैतिक आंदोलनों में पड़े। वहाँ तक भी वह देखती है कि (जोर जबरदस्ती) अपनी आँखों की तरह रहते हैं, गोपि गोपिकों की तरह। सारी प्रेम की जो लहरें इन दीवारों को तोड़ सकती थी, उसीमें कुछ कमी है, या निराला की कविताओं में ये दीवारें अनुल्लंघ्य और 'लौह-द्वार' की तरह हैं। यही मजबूरी बार बार व्यक्त की गई है।

पुरुष को कुछ जीववैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक कारणों से और बहु-पुरुषी प्रेम करनेवाला, polygamous कहते हैं। स्त्री उसके उलटे अंतर्मुखी, एकाग्र, एक पतिव्रता मानी गई है। दोनों की प्रकृति की बनावट से ऐसा होता है ऐसा भी एक मत है। पुरुष आक्रामक, उद्धत, दुर्धर्ष और अनुशासित होता है; स्त्री लज्जालु, संकोची, क्रीडामयी, सहिष्णु होती है। परंतु यह पुराना मत अब वैज्ञानिक नहीं मानते। उनका कहना है कि यह ऐसी सामंती समाजव्यवस्था, पूंजीवादी समाजव्यवस्था के कारण हुआ है।

इस उपन्यास में 'एकलता', 'एक नारी', 'आत्मघात का नारा', पौराणिक पंच-कन्याओं में नारी' इन सबको पत्नीव्रत भावार्थ एकाकी का दिया गया है। अलग-अलग वाक्यों के अर्थ देना आवश्यक नहीं। फिर यहाँ अंग्रेजी तो केवल बातचीत में पढ़े लिखे की तरह शब्द प्रयुक्त हैं। उसमें कोई गूढ़ अर्थ नहीं है।

भवदीय — प्रभाकर माचवे

पंजीकृत कार्या. एवं प्रेस ▷ 117-ए, सेक्टर-ई, सांवेर रोड इण्डस्ट्रीयल एरिया, इन्दौर ग्राम ▷ संसार फोन ▷ 21931, 23137
शहर कार्या. ▷ 13-14, जवाहर मार्ग, प्राधिकरण भवन (चौथी मंजिल), इन्दौर-452 007 फोन ▷ 67803, 65670